nwda.gov.in

जागरण विशेष

# केरल के बाद मप्र भी बजट-आडिट से जल संचय की ओर बढ़ा

## सर्वे में पानी की आवक, उपयोग और व्यर्थ बहने वाले पानी का डाटा एकत्रित किया जा रहा, मानसून बाद लागू होगी योजना

विशाल छटिये • नईदुनिया

**खरगोन:** केरल के बाद मध्य प्रदेश भी बजट-आडिट से जल संचय की ओर बढ़ा है। प्रदेश का खरगोन जल बजट बनाकर पानी की खपत नियंत्रित करने का नवाचार करने जा रहा है। कितना पानी मिला, कितना उपयोग किया गया और कितना व्यर्थ बहा-इसका आडिट किया जाएगा। घटते जलस्तर के बाद जिला पंचायत के अधिकारियों ने इसपर काम शुरू किया है। अभी पायलट प्रोजेक्ट में भगवानपुरा के रसगांगली, भीकनगांव का चिकलवास व झिरन्या का गाडग्याम गांव शामिल है। मानसून के बाद जिले के 600 गांवों में यह लागू होगा। सर्वे भी शुरू हो गया है।

सर्वे में पहले क्षेत्र में पानी की आवक, उपयोग और व्यर्थ बहने वाले पानी का डाटा एकत्रित किया जाएगा। इसके अनुरूप उस गांव में पौधारोपण, कंटूर, यूज बोल्डर, चेक डैम, स्टाप डैम और तालाब का निर्माण होगा। प्रभारी मनरेगा अधिकारी रमाकांत पाटीदार का कहना है कि अब तक जल संरक्षण के लिए तालाब, स्टाप डैम, पौधारोपण करते आ रहे हैं, फिर भी जल संरक्षण नहीं हो रहा है। अब केरल की तरह इस पर आगे बढ़ेंगे। इसमें पानी की पूरी जानकारी होगी। इस अभिनव प्रयोग से जल संरक्षण व संवर्धन के साथ ही जिले के जल स्तर में सुधार होगा। अभी जिले का जल स्तर 38 मीटर है। उल्लेखनीय है कि 18 अप्रैल, 2023 को जल बजट लागू कर केरल देश का पहला ऐसा राज्य बन गया है, जिसने गर्मियों में पानी की कमी की स्थिति से निपटने के लिए बजट बनाकर इस पर काम शुरू किया।

### परंपरागत के साथ ही होगा तकनीक का उपयोग

यह योजना जनसहयोग से पूरी होगी। इसमें परंपरागत और तकनीक का सहारा लिया जाएगा। जल संरक्षण के लिए ग्रामीण अपनी परंपरागत पद्धति बताएंगे तो अधिकारी तकनीक से जल संरक्षण करेंगे। लक्ष्य-आने वाले कुछ वर्षों में जलसंकट की स्थिति से जिले को उबार लिया जाए।

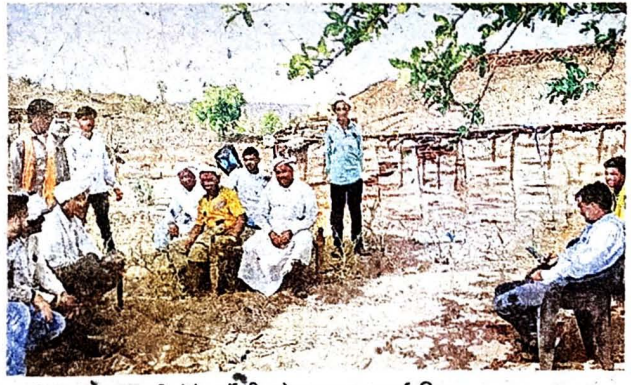

ग्रामीणों से जानकारी लेते सर्वे टीम के सदस्य • नईदुनिया

**23** लाख है खरगोन जिले की आबादी

**6** हजार कुल आबादी रसगांगली, चिकलवास व गोडग्याम गांवों की है

**825** मिमी जिले की औषत वर्षा

• भगवानपुरा, भीकनगांव और झिरन्या में सबसे अधिक जलसंकट

**6** जिले में पायलट प्रोजेक्ट में अभी तीन गांवों को शामिल किया गया है। इसमें कितना जल मिलता है, कितना उपयोग करते हैं और कितना व्यर्थ बहता है, इसका आडिट होगा। इसके लिए सर्वे किया जा रहा है। 20 जून को सर्वे रिपोर्ट के आधार पर जरूरत के हिसाब से पौधारोपण, कंटूर, तालाब निर्माण होगा। इससे गर्मी में भी जल मिलेगा और जल संरक्षण होगा। इसके बाद जिले के 600 गांवों में भी ऐसा किया जाएगा।

**आकाश सिंह**, प्रभारी कलेक्टर व जिला पंचायत सीईओ, खरगोन

**कंटूर:** पहाड़ी क्षेत्र में सीढ़ियों जैसी खोदाई कर बनाई जाने वाली संरचनाओं को कंटूर कहा जाता है। इसका उदेश्य पहाड़ से बहकर जमीन पर आने वाले पानी को व्यर्थ बहने से रोकना और संग्रह करना है।

**यूज बोल्डर:** इसमें नाले पर पत्थर जमाकर इसमें मुरम डाली जाती है। इससे पानी का संग्रहण होता है।

**चेक डैम:** यह नाले या नदी पर बनाया जाता है। इसमें पत्थर व सीमेंट से तीन से पांच फीट ऊंची और 10 फीट लंबी दीवार बनाई जाती है। यह पानी के बहाव को रोककर उसका संग्रहण करता है।

**स्टाप डैम:** यह पांच से सात फीट ऊंचा और 10 से 50 फीट लंबा पत्थर व सीमेंट का बनाया गया बांध होता है। इसमें बकायदा गेट भी बनाए जाते हैं। यह अधिक मात्रा में पानी संग्रहण के काम आता है। यह आकार में चेक डेम से बड़ा होता है।

अतिरिक्त सामग्री पढ़ने के लिए स्कैन करें।